सचित्र बाल कथाएँ

सागर के मोती

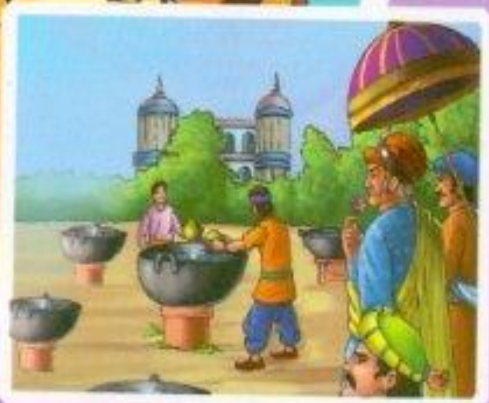

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

20

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

संत की उदारता

एक संत के पास गाय थी। रात को चोर उसे खोलकर चुरा ले चला। संत की आँख खुल गई। वे उसके छोटे बछड़े को कंधे पर रखकर चोरों के पीछे-पीछे चले और चिल्लाकर बोले—"भले आदमी इस बछड़े को तो लेते जाओ। इसके बिना दूध कैसे निकालोगे?"

चोर संत की उदारता पर मुग्ध हो गए और उनकी गाय उन्हीं को वापस कर गए।

वही ब्राह्मण बड़ा कहलाता है जो दूसरों की भलाई की बात सोचता है।

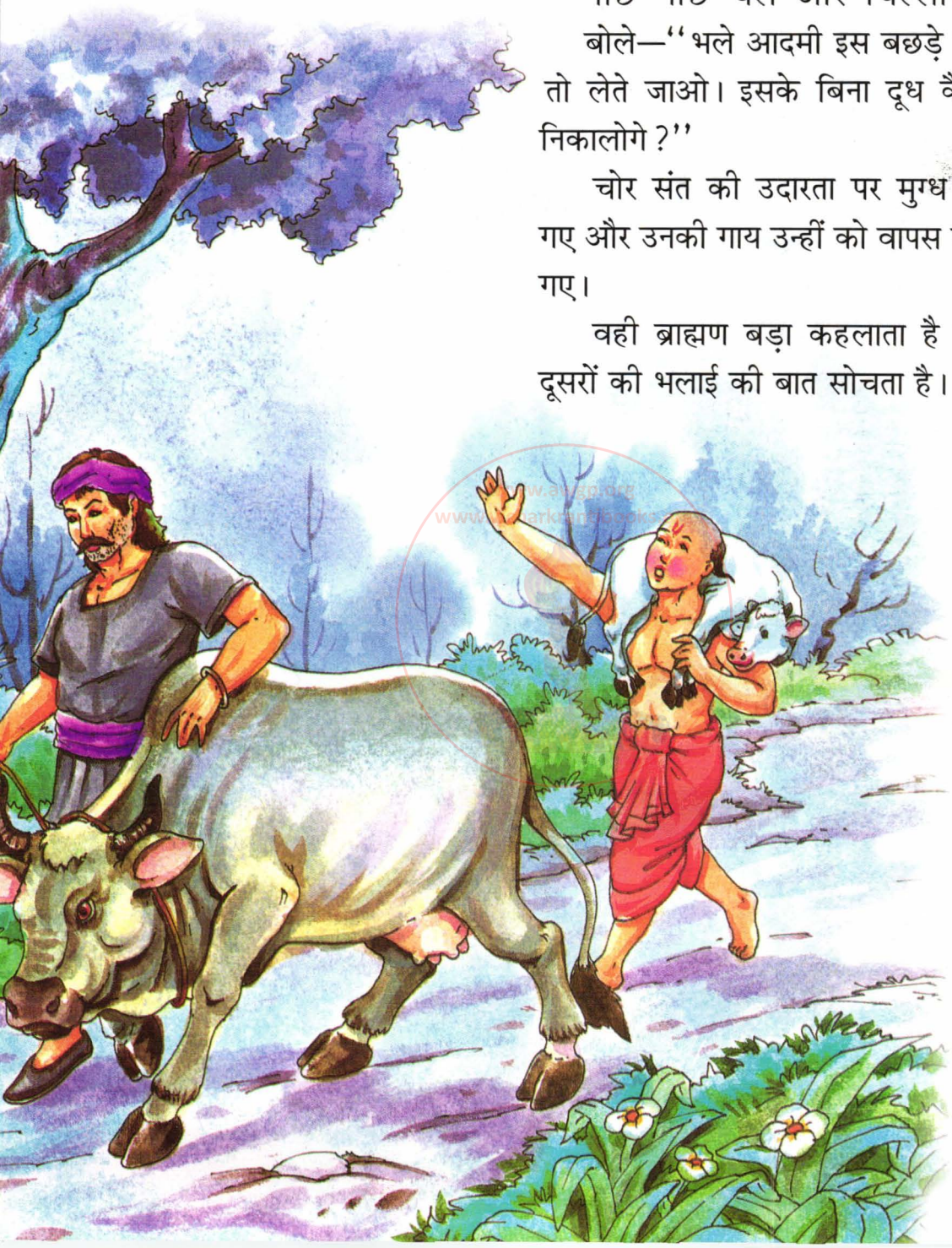

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वप्न पर मत रीझो

एक युवक ने स्वप्न में देखा कि वह किसी बड़े राज्य का राजा हो गया है। स्वप्न में मिली इस अचानक संपदा के कारण उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

सुबह हुई तो पिता ने काम पर चलने को कहा, माँ ने लकड़ियाँ काट लाने की आज्ञा दी, धर्मपत्नी ने बाजार से सौदा लाने का आग्रह किया। पर युवक ने कोई भी काम न कर एक ही उत्तर दिया—"मैं राजा हूँ, मैं कोई काम कैसे कर सकता हूँ?"

घर वाले बड़े हैरान थे, आखिर किया क्या जाए? तब उनकी छोटी बहन ने कहा, मैं देखती हूँ और उपाय सोचती हूँ। एक-एक कर उसने सबको बुलाकर चौके में भोजन करा दिया। अकेले खयाली राजा बने महाराज ही बैठे के बैठे रह गए।

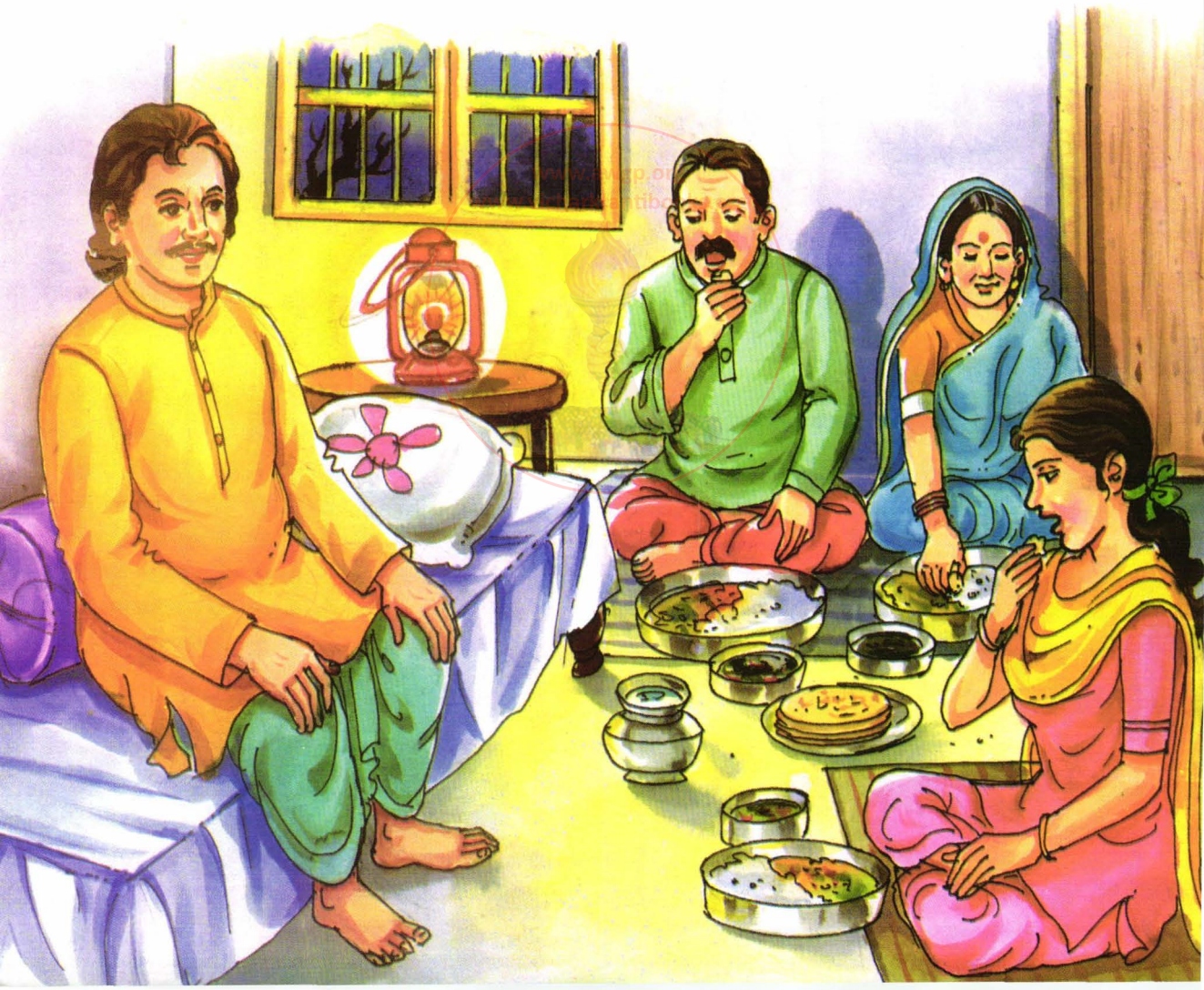

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाम हो गई, भूख से आँतें कुलबुलाने लगीं। आखिर जब रहा नहीं गया तो उसने बहन से कहा—"क्यों री! मुझे खाना नहीं देगी क्या?"

बालिका ने मुँह बनाते हुए कहा—"राजाधिराज! रात आने दीजिए, परियाँ आकाश से उतरेंगी, वही आपके उपयुक्त भोजन प्रस्तुत करेंगी। हमारे रूखे-सूखे भोजन से आपको संतोष कहाँ होता?"

व्यर्थ की कल्पनाओं में विचरण करने वाले युवक ने हार मानी और मान लिया कि धरती पर रहने वाले मनुष्य को निरर्थक लौकिक एवं भौतिक कल्पनाओं में ही न डूबे रहना चाहिए वरन जीवन का जो शाश्वत और सनातन सत्य है, उसे प्राप्त करने और धारण करने का प्रयत्न भी करना चाहिए। इतना मान लेने पर ही उसे भोजन मिल सका।

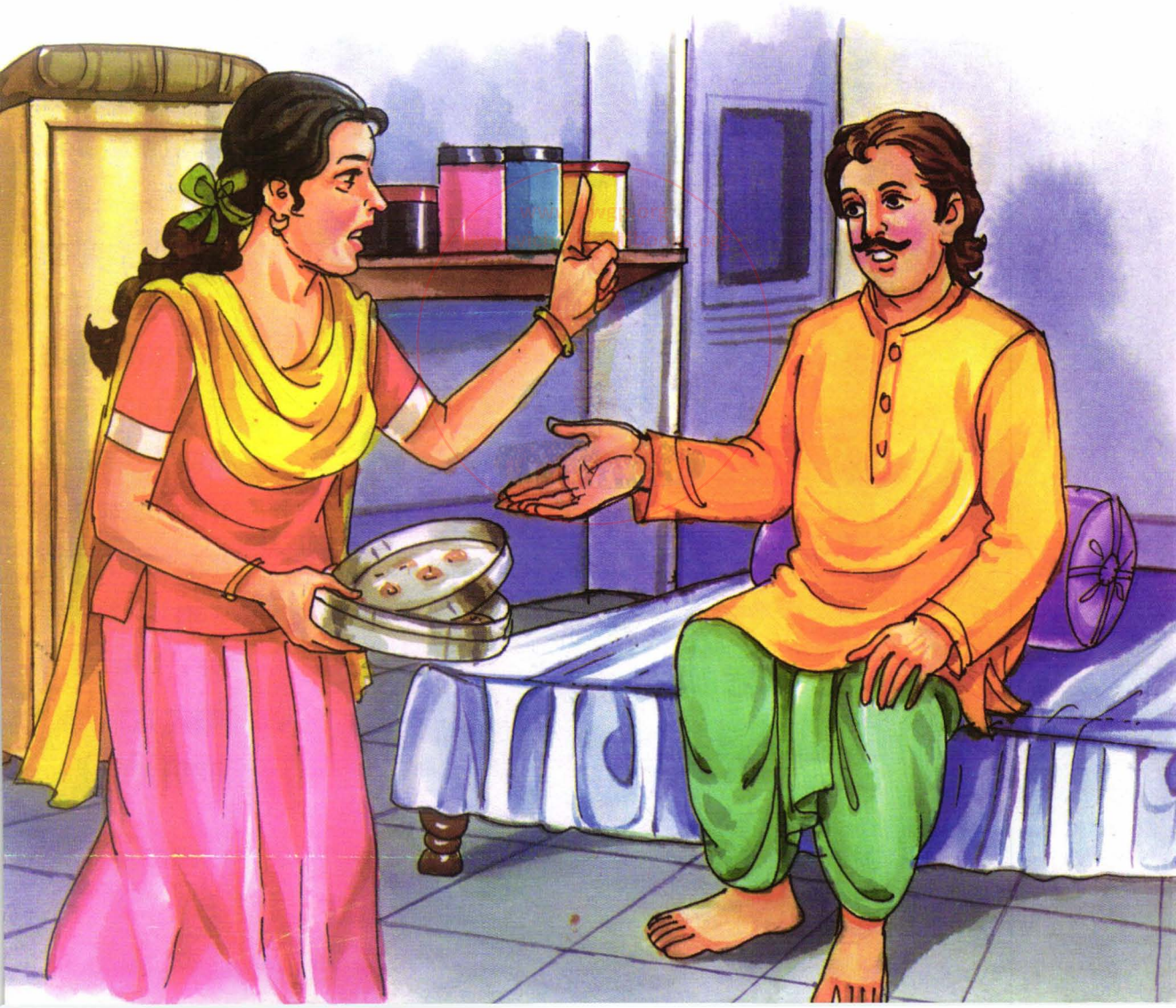

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पक्षियों की रक्षा

कौरवों और पांडवों की सेनाएँ आमने-सामने आ गईं। शंख बजने लगे, घोड़े खुरों से जमीन खूँदने और हाथी चिंघाड़ने लगे। कुरुक्षेत्र के समरांगण में सर्वनाश की तैयारी पूरी हो चुकी थी। ठीक तभी एक टिटहरी का आर्तनाद गूँज उठा। दोनों शिविरों के मध्य एक छोटी सी टेकरी थी, उसी की खोह में उसका घोंसला था।

उसकी आँखें अपने बच्चों की ओर लगी थीं और कान धनुषों की टंकार पर। उसे चिंता अपने जीवन की नहीं, अपने बच्चों की थी और बिना सहारे के होने पर माता का रोना घोंसले में सुनाई पड़ने लगा। कृष्ण के कानों तक यह पुकार पहुँची। असंख्य वीरों की बलि और युद्ध के भयंकर कोलाहल के बीच भी जिनकी बाँसुरी के स्वर कभी विचलित नहीं हुए थे, उन्हीं कृष्ण को इस टिटहरी के स्वर ने झकझोर डाला। वे दौड़े गए।

एक पत्थर उठाकर घोंसले के द्वार पर सहेज दिया और वापस आकर अपना स्थान ग्रहण करते हुए सेनापति से कहा "महावीर भीम, अब तुम युद्ध का बिगुल बजा सकते हो।" भगवान बेसहारों का सहारा होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मौत के मुँह में साँप और चूहा

एक पेड़ पर दो बाज प्रेमपूर्वक रहते थे। दोनों शिकार की तलाश में निकलते और जो भी पकड़कर लाते, उसे शाम को मिल-बैठकर खाते। बहुत दिन से उनका यही क्रम चल रहा था। एक दिन दोनों शिकार पकड़कर लाए तो एक की चोंच में चूहा था और दूसरे की चोंच में साँप। शिकार दोनों ही तब तक जीवित थे। पेड़ पर बैठकर बाजों ने जब उनकी पकड़ ढीली की, साँप ने चूहे को देखा और चूहे ने साँप को देखा।

साँप चूहे का स्वादिष्ट भोजन पाने के लिए जीभ लपलपाने लगा और चूहा साँप के प्रयत्नों को देखकर अपने पकड़ने वाले बाज के डैनों में छिपने का उपक्रम करने लगा।

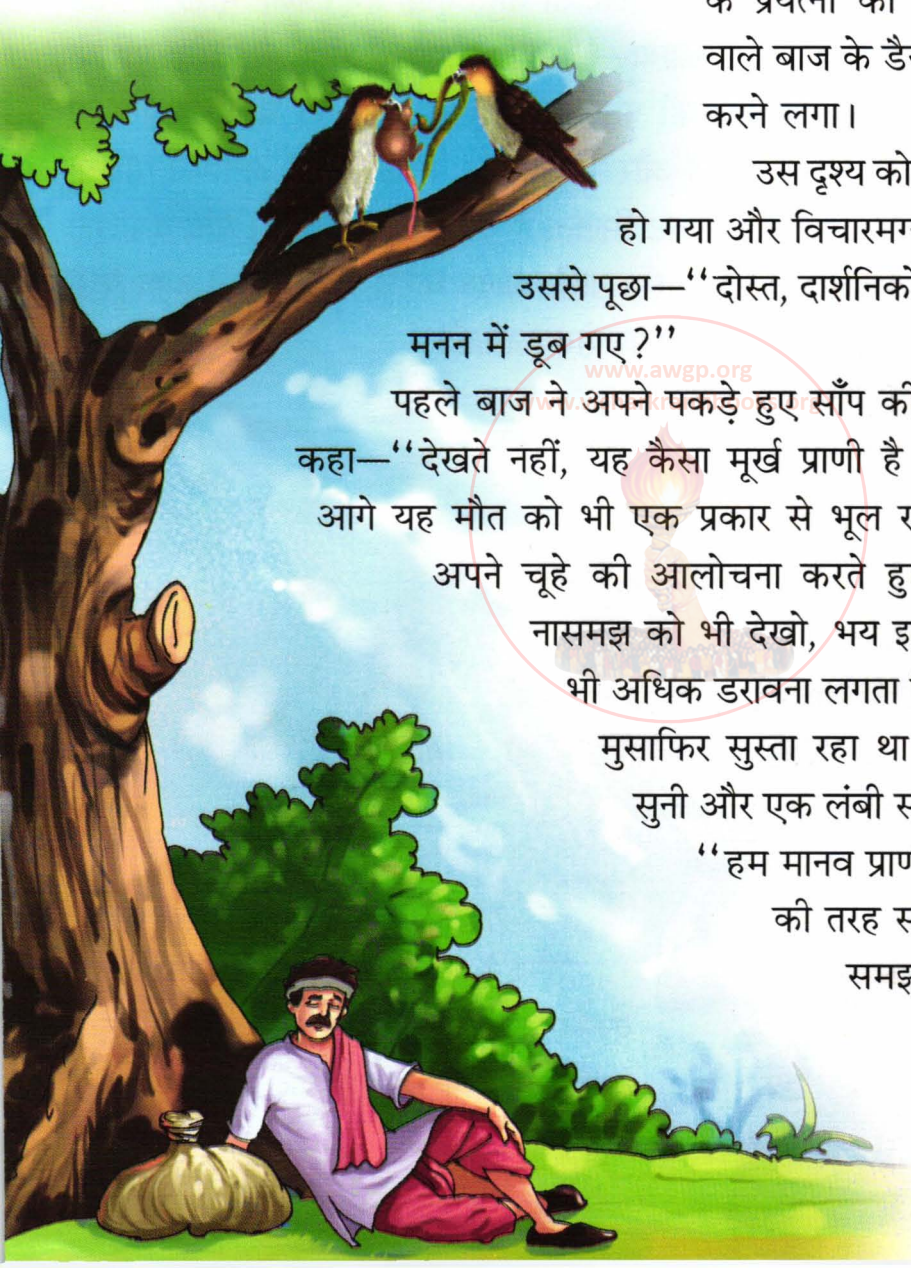

उस दृश्य को देखकर एक बाज गंभीर हो गया और विचारमग्न दीखने लगा। दूसरे ने उससे पूछा—"दोस्त, दार्शनिकों की तरह किस चिंतन-मनन में डूब गए?"

पहले बाज ने अपने पकड़े हुए साँप की ओर संकेत करते हुए कहा—"देखते नहीं, यह कैसा मूर्ख प्राणी है? जीभ की लिप्सा के आगे यह मौत को भी एक प्रकार से भूल रहा है।" दूसरे बाज ने अपने चूहे की आलोचना करते हुए कहा —"और इस नासमझ को भी देखो, भय इसे सामने खड़ी मौत से भी अधिक डरावना लगता है।" पेड़ के नीचे एक मुसाफिर सुस्ता रहा था। उसने दोनों की बात सुनी और एक लंबी सांस छोड़ते हुए बोला—"हम मानव प्राणी भी तो साँप और चूहे की तरह स्वाद और भय को बड़ा समझते हैं और इसी तरह मृत्यु को भूले रहते हैं।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दयालुता का प्रदर्शन

एक राजा को दयालु कहलाने और दानवीर कहलाकर अपनी प्रशंसा सुनने की ललक लगी। सो उसने एक दिन ऐसा निश्चय किया कि पक्षी पकड़ने वाले लोग दरबार में बुलाए जाएँ जो बंदी पक्षियों के मूल्य लेकर उन्हें स्वतंत्र कर दें।

थोड़े दिनों में राजा की दयालुता का यश फैला। निश्चित दिन पर हजारों पिंजड़े खाली होते और राज्यकोष से उन्हें धन मिलता। कीर्ति बढ़ गई, साथ-साथ पकड़े जाने वाले पक्षियों की संख्या भी।

एक मुनि-मनीषी वहाँ पहुँचे। दृश्य देखा, तो बहुत दुखी हुए। पक्षी-मुक्ति समारोह समाप्त होने पर मुनि ने राजा को समझाया—"आपकी यश-कामना इन निरीह पक्षियों को बहुत महँगी पड़ती है। लालच की पूर्ति के लिए असंख्यों नए बहेलिये पैदा हो गए हैं और पकड़े जाने के कुचक्र में अगणित पक्षियों को कष्ट मिलता है और प्राण जाता है। यदि दयालुता का प्रदर्शन नहीं, पालन करना चाहते हैं तो आप पक्षी पकड़ने पर रोक लगाएँ।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

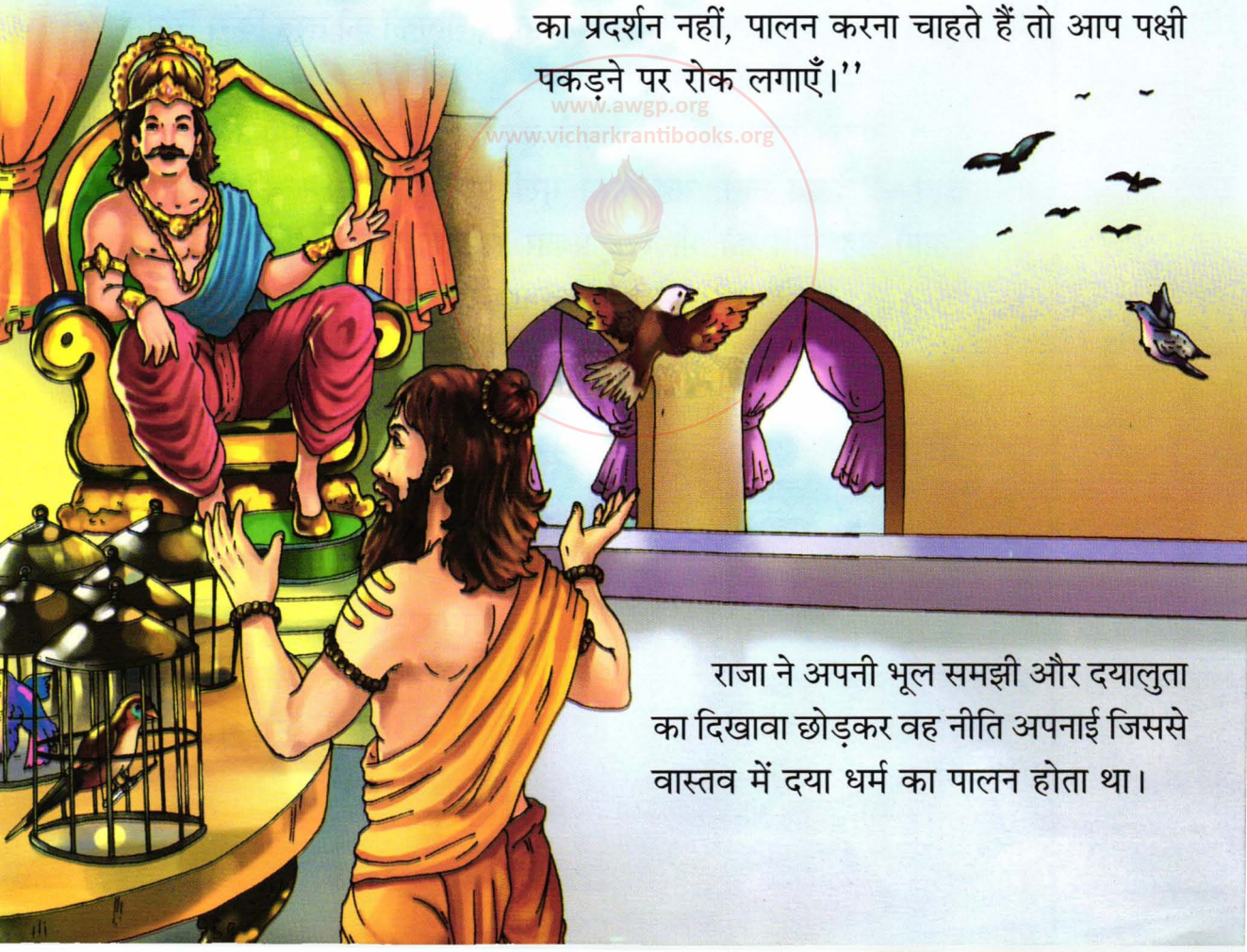

राजा ने अपनी भूल समझी और दयालुता का दिखावा छोड़कर वह नीति अपनाई जिससे वास्तव में दया धर्म का पालन होता था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बूँद, जो मोती बनी

स्वाति नक्षत्र की वेला थी। खेतों को पानी की जरूरत पड़ी। बादलों में बसने वाली बूँदें मचलने लगीं, बोलीं—"हमें आसमान नहीं, जमीन चाहिए। उड़ने में क्या आनंद। नीचे वालों के साथ आत्मसात बनकर क्यों न जिएँ?"

बादल अपने समुदाय को अंचल में ही समेट रखना चाहते थे। बरसने की उन्हें जल्दी न थी। फिर भी बूँद मचली सो मचली। आगे-पीछे सोचे बिना धरती पर टपक ही पड़ी। सहेलियों को यह उतावली भायी नहीं।

हवा ने साथ नहीं दिया। खेतों तक दौड़ सकने की उसमें सामर्थ्य नहीं थी। फिर भी सोचती रही। मन मसोसकर क्यों रहा जाए? जितना बन पड़े उतना ही क्यों न किया जाए?

बूँद बहुत दूर न चल सकी और जहाँ भी बन पड़ा वहीं बरस पड़ी। सरोवर तट पर बैठी हुई सीप ने उसकी ममता को परखा और मुँह खोल दिया—"देवि! आओ तुम्हें कलेजे से लगाकर रखूँगी। तुमसे बढ़कर कौन है इस संसार में, जिसे अपना बनाऊँ?" सीप में स्वाति की बूँद गिरी और सीप में मोती बन गई। बूँद और सीप दोनों धन्य हो गए।

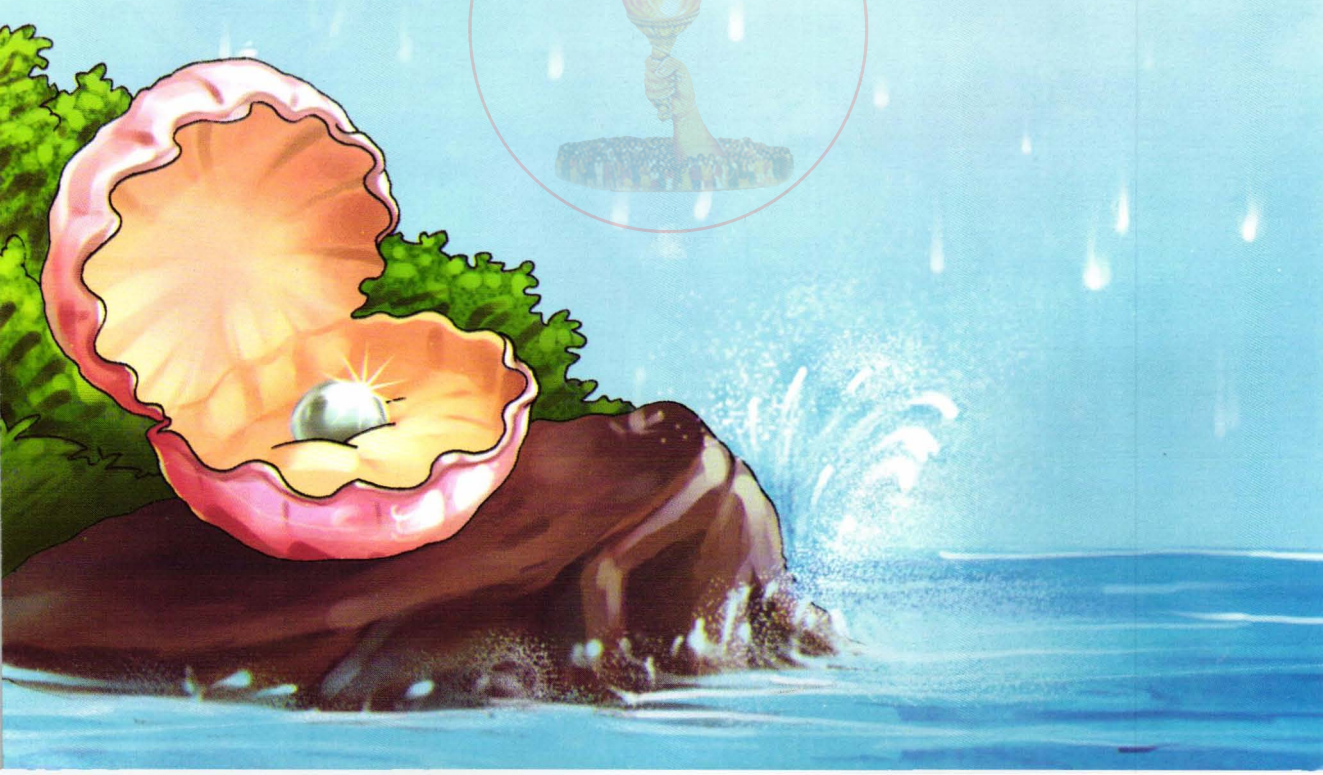

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमाई का दरद

एक सद्गृहस्थ लुहार था। श्रम और कुशलता से परिवार का पालन-पोषण भली प्रकार कर लेता था। उसके लड़के को अधिक खरच करने की आदत पड़ने लगी। पिता ने पुत्र पर रोक लगाने के लिए कहा—"तुम अपने श्रम से चार चवन्नियाँ भी कमाकर ले आओ, तो तुम्हें खाना दूँगा अन्यथा नहीं।"

लड़के ने प्रयास किया, असफल रहा तो अपनी जेबखरच की चार चवन्नियाँ लेकर पहुँचा। पिता भट्ठी के पास बैठा था। उसने हाथ में लेकर चवन्नियाँ देखीं तथा कहा—"यह तेरी कमाई हुई नहीं हैं।" यह कहकर उन्हें भट्ठी में फेंक दिया। लड़का शरमिंदा होकर चला गया। दूसरे दिन फिर कमाई करने की हिम्मत न पड़ी, तो माँ से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चुपके से माँगकर चार चवन्नियाँ ले गया। उस दिन भी वही हुआ। तीसरे दिन कहीं से चुरा लाया। परंतु पिता को धोखा न दिया जा सका। वह हर बार 'मेहनत की कमाई नहीं' कहकर उन्हें भट्ठी में फेंकता रहा। लड़के ने समझ लिया बिना कमाए बात नहीं बनेगी। दो दिन मेहनत करके वह किसी प्रकार चार चवन्नियाँ कमा लाया। पिता ने उन्हें देखकर भी वही बात दोहरायी तथा भट्ठी में फेंकने लगा। लड़के ने चीखकर पिता का हाथ पकड़ लिया और बोला—"क्या करते हैं पिताजी, मेरी मेहनत की कमाई इस बेदरदी से भट्ठी में मत फेंकिए।" पिता मुस्कराया बोला—"बेटा! अब समझे मेहनत की कमाई का दरद। जब तुम बेकार के कामों में मेरी कमाई खरच कर देते हो, तब मुझे भी ऐसी ही छटपटाहट होती है।"

पुत्र की समझ में बात आ गई, उसने दुरुपयोग न करने की कसम खाई और पिता का सहयोग करने लगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकता में शक्ति

महिषासुर नाम का एक राक्षस था। वह देवताओं को बहुत परेशान करता था। उसने देवताओं पर आक्रमण कर दिया और देवताओं को हरा दिया। देवता दुखी होकर प्रजापति (ब्रह्मा) के पास गए। प्रजापति ने देवताओं को मिलकर एकता के साथ रहने को कहा। देवताओं की शक्तियों के मिलने से एक नई शक्ति दुर्गा शक्ति प्रगट हुई और देवताओं की सम्मिलित शक्ति ने महिषासुर नाम के उस राक्षस को मार गिराया।

आलस्य और कामचोरी भी हमारे अंदर बैठा एक राक्षस ही है। जो इनके वश में हो जाता है, उसे हर काम में असफलता ही मिलती है, जो साहसपूर्वक इनका मुकाबला करता है, इन राक्षसों को जीत पाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य की लगन

एक लड़का था। वह और उसकी माँ एक घने जंगल में रहते थे। उस जंगल में बहुत से भेड़िये थे। बालक को भेड़िया न खा जाए, इस डर से उसकी माँ उसे कोठरी में बंद करके काम करने बाहर चली जाती थी। जब वह बालक बड़ा हो गया तो वह भी माँ के साथ लकड़ी काटने जाने लगा। यहीं से उसे मेहनत करने की आदत पड़ गई। वह पढ़ना चाहता था इसलिए उसने एक पुस्तकालय में सफाई करने और कपड़े धोने की नौकरी कर ली। पढ़ते-पढ़ते उसने एम० ए० भी कर लिया। धीरे-धीरे उसे नौसेना में काम मिला। जब उसके पास वेतन का कुछ रुपया जमा हो गया तो उसने बिगड़े हुए, आवारा लड़कों को सुधारने का काम हाथ में लिया। उसने एक आश्रम खोला। धीरे-धीरे उसके आश्रम में हजारों लड़के दाखिल हो गए। उसने उन्हें सुधारा ही नहीं वरन उन्हें आदरपूर्वक जीना भी सिखाया।

ये छोटे-छोटे कार्य करके भी मनुष्य महान बन सकता है तथा दूसरों को भी महान बना सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवेक की परख

एक व्यक्ति अपने तीन बच्चों को किसी विचारशील के पास ले गया और बोला—"इनके गुण और भविष्य बताइए।" विज्ञ व्यक्ति ने तीनों को दो-दो केले दिए। एक ने छिलका उतारकर सड़क पर फेंक दिया। दूसरे ने कूड़ेदान में डाल दिया। तीसरे ने गाय को खिला दिए। भविष्यवक्ता ने कहा—"इनमें से एक मूर्ख, दूसरा समझदार और तीसरा उदारचेता बनेगा।"

पिता ने पूछा—"आपने कौन सा गणित लगाकर यह भविष्यवाणी की।" विचारक ने कहा—"विवेक के गणित से बढ़कर निर्धारण और किसी विधा से नहीं होता।"

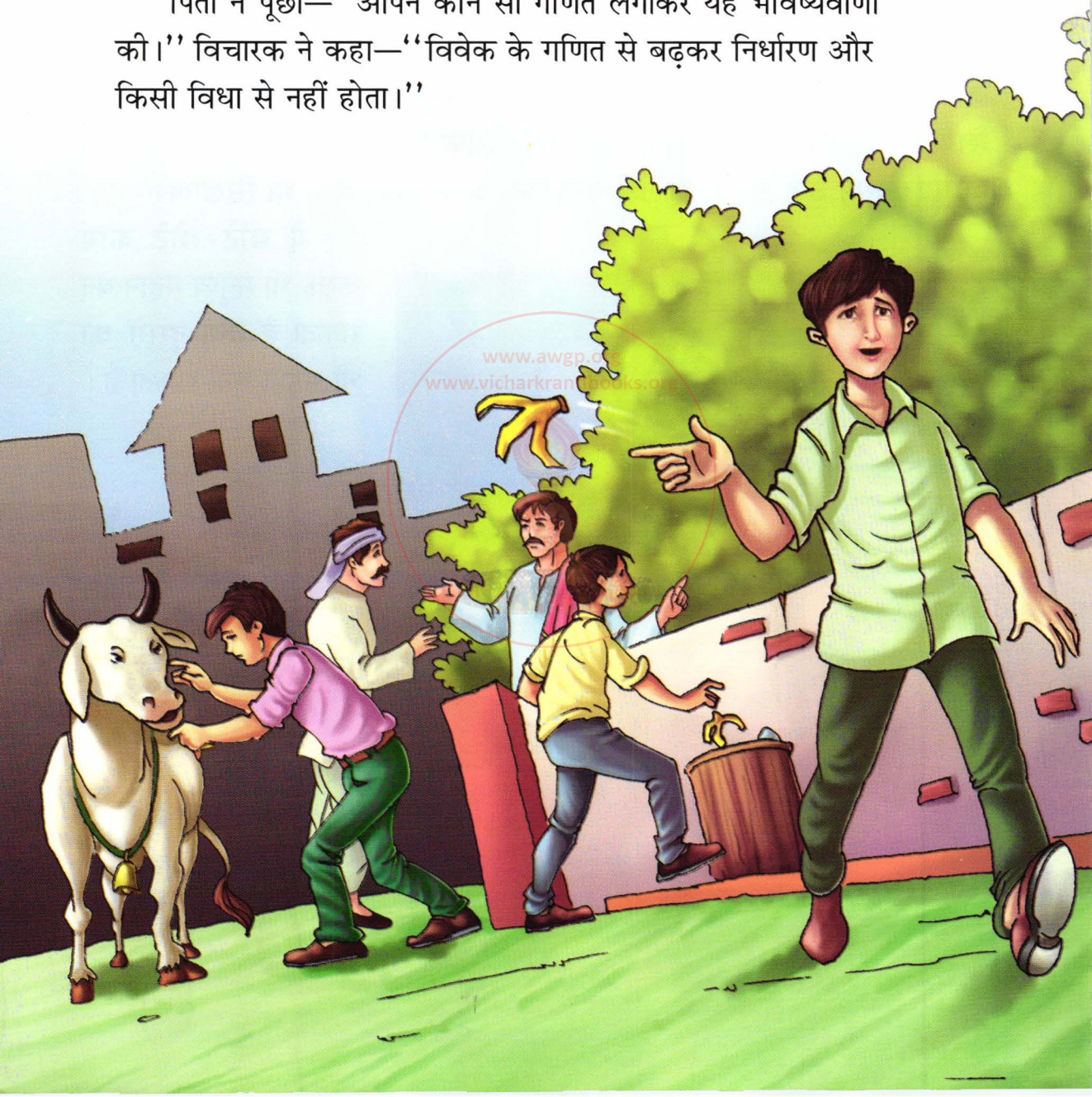

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छी सोच-समझ

एक बार ईसा एक गाँव से होकर गुजर रहे थे। उन्होंने एक आदमी को एक स्त्री के पीछे भागते हुए देखा, तो रुक गए और उसे गलत कार्य करने से मना करने और समझाने लगे।

गौर से चेहरा देखा तो वह पूर्ण परिचित सा लगा। स्मरण करने पर पुरानी घटना याद आई। उन्होंने फिर कहा—"अरे! तू तो वह व्यक्ति है जिसने दो वर्ष पूर्व अंधेपन से छुटकारा पाने की याचना की थी और मैंने प्रभु से प्रार्थना करके आँखों की ज्योति दिलाई थी।" उस व्यक्ति ने ईसा को पहचान लिया और बोला—"आप जो कहते हैं सो ही सत्य है।" ईसा ने कहा—"मैंने तुझे देखने की शक्ति इसीलिए नहीं दिलाई थी कि उसका उपयोग ऐसे घिनौने काम के लिए करे।"

व्यक्ति कुछ देर चुप बैठा रहा और अपनी भूल पर आँसू बहाता रहा, पर आगे पैर बढ़ाते हुए महाप्रभु के चरण चूमकर उसने दबी जबान से इतना और कहा—"आपने नेत्र दृष्टि तो दिलाई, यदि अच्छा सोचने की बुद्धि पहले दिलाई होती तो कितना अच्छा होता?" ईसा ने आज नया पाठ पढ़ा। वे लोगों को सुविधा दिलवाने की अपेक्षा उनकी समझ सुधारने की बात को प्राथमिकता देने लगे।

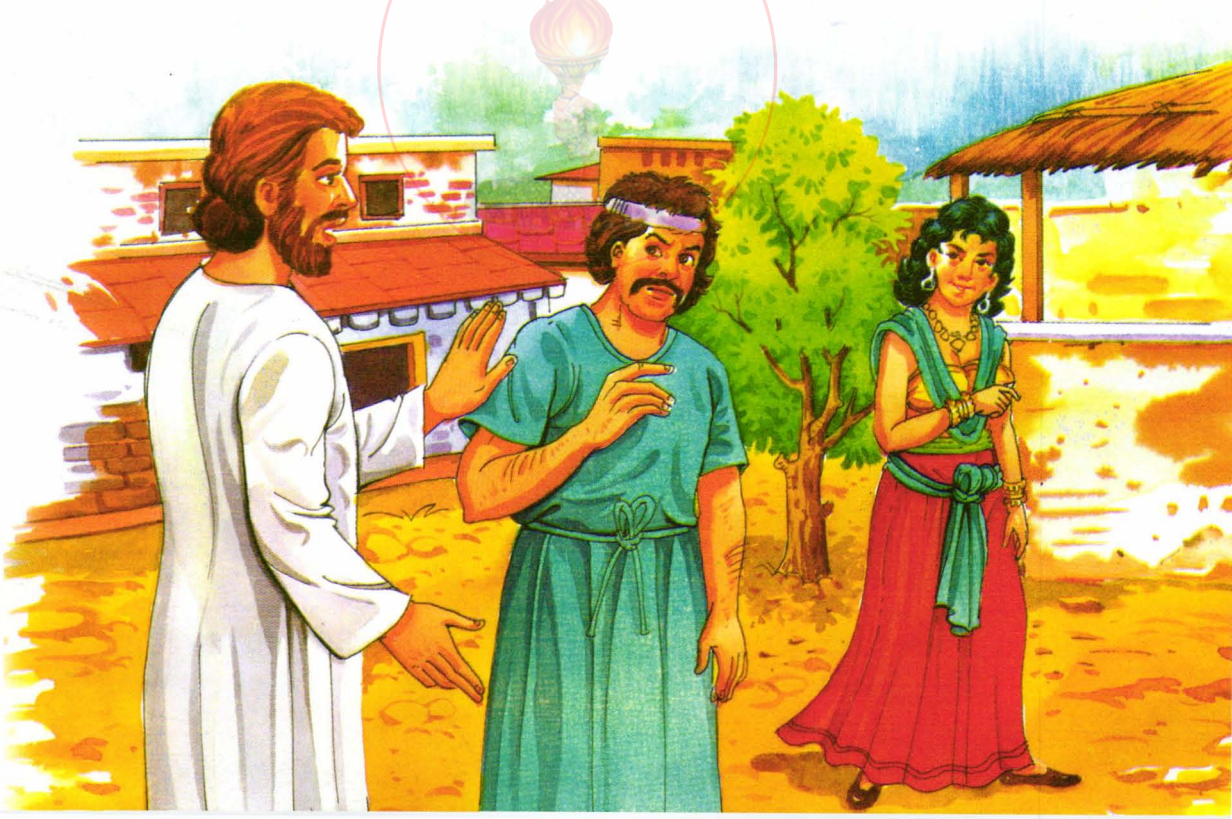

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हृदय और जीभ

जानने की इच्छा से एक व्यक्ति ने ज्ञानी से पूछा—"जीवन को सुशोभित करने वाले देवता कौन से हैं?" उत्तर मिला—"हृदय और जीभ।"

दूसरा प्रश्न था—"जीवन को नष्ट करने वाले दो राक्षस कौन से हैं?" उत्तर मिला—"हृदय और जीभ।"

क्योंकि जीभ से मधुर बोलकर हम दूसरों को अपना बना लेते हैं। इसी जीभ के स्वाद और गलत-कठोर वाणी के कारण स्वयं को दुःख भी मिलता है। स्वास्थ खराब होता है।

वाणी और हृदय कठोर हों तो व्यक्ति का पतन होता है, वाणी और हृदय कोमल हों तो व्यक्ति महान बनता जाता है।

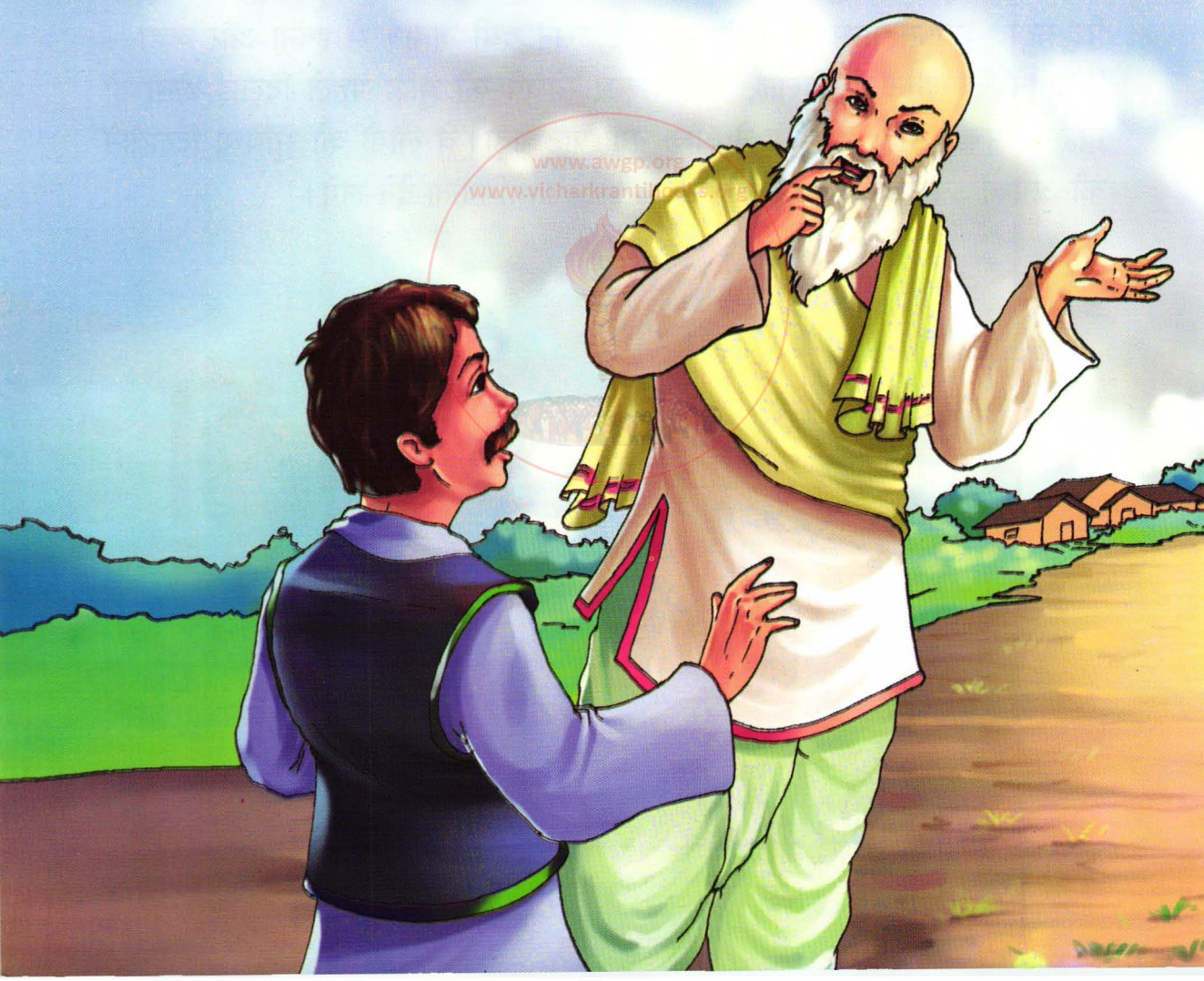

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमत—अल्पमत

एक पेड़ पर उल्लुओं का झुंड रहता था। दिन निकलते ही उन्हें दीखना बंद हो जाता था। सो वे अपने-अपने कोटरों में जा छिपते। एक दिन एक हंस उधर से आ निकला। उसने कहा—"सूर्य का प्रकाश कितना सुंदर फैल रहा है। तुम संसार का सौंदर्य क्यों नहीं देखते।" उल्लू हँस पड़े और बोले—"सूर्य का अस्तित्व होता तो वह हमें क्यों नहीं दीखता।" बहुमत के आगे अपनी ज्ञान-शिक्षा को सफल न होते देखकर अल्पमत वाला हंस हार मानकर अन्यत्र उड़ गया।

आज भी ऐसे मूर्ख-नासमझ लोगों की कमी नहीं है। अहंकारी अपने सामने किसी की चलने नहीं देते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण में सचाई

महात्मा गांधी बचपन में तेज बुद्धि के विद्यार्थी नहीं थे। पर उनमें बचपन से ही महान बनाने वाली कई विशेषताएँ थीं। गांधी जी में एक बहुत बड़ी विशेषता थी, वह यह कि वे अपने आचरण में सचाई का बहुत अधिक ध्यान रखते थे।

एक बार उनके स्कूल में मुआयने के लिए इंस्पेक्टर साहब आए। गांधी जी की कक्षा की परीक्षा हुई। उसमें पाँच शब्दों की स्पेलिंग लिखने के लिए दी गई। गांधी जी ने उसमें से एक गलत लिख दी। कक्षा के अध्यापक ने इशारा किया कि वे आगे वाले विद्यार्थी की नकल कर लें। परंतु गांधी जी ने नकल नहीं की।

परीक्षा में सब उत्तीर्ण हुए। केवल गांधी जी ही अनुत्तीर्ण रहे। मास्टर साहब ने इंस्पेक्टर के चले जाने पर गांधी जी को खूब डांट लगाई।

गांधी जी ने विनम्र परंतु दृढ़ शब्दों में उत्तर दिया—"मास्टर साहब! दूसरे की नकल करके पास होने की अपेक्षा अपनी बुद्धि से अनुत्तीर्ण होना अच्छा है। झूठी सफलता के लिए अपनी आत्मा की सचाई को बेचना मेरे लिए संभव नहीं है।"

अध्यापक गांधी जी के इस कथन से आश्चर्यचकित रह गए। इतनी कम आयु का बालक, अपनी हानि सहकर भी इतना सच्चा और ईमानदार हो, यह दुर्लभ बात थी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

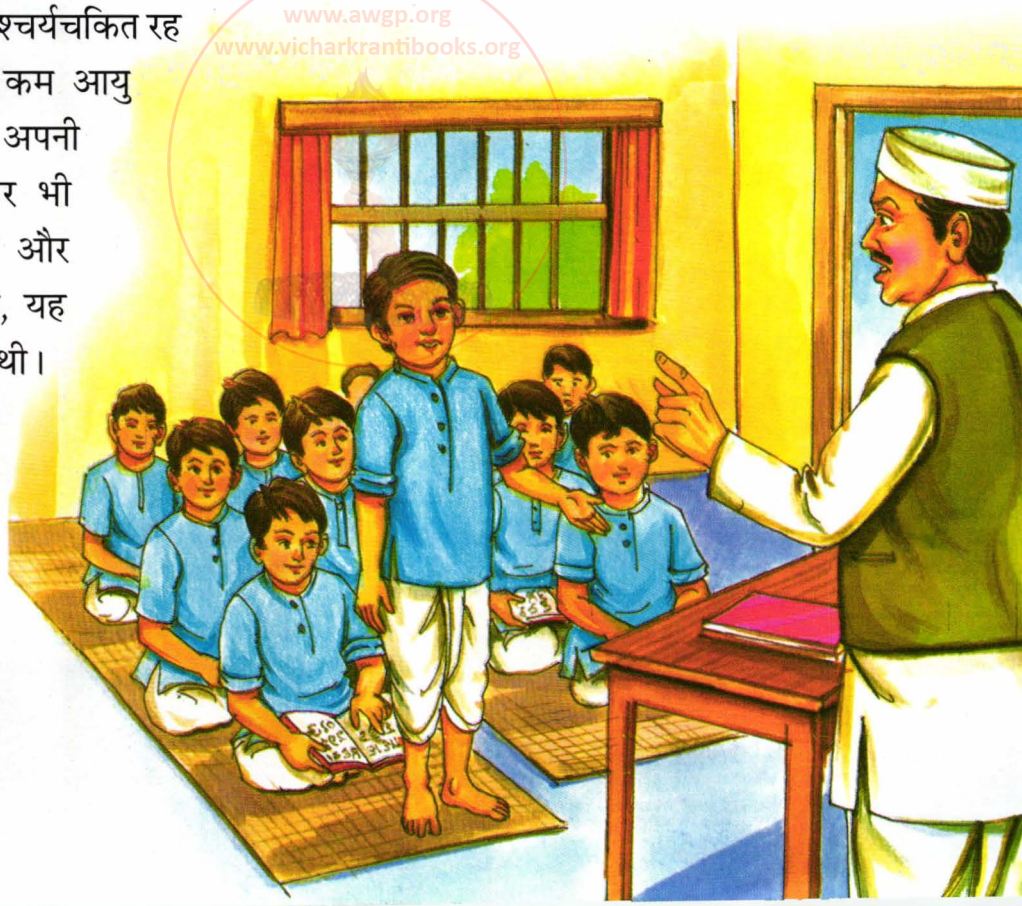

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

झगड़े का परिणाम

एक बार कई पक्षी एक बहेलिये के जाल में फँस गए। पक्षियों ने सलाह की और एक साथ जाल लेकर उड़ गए। व्याध भी उनके पीछे दौड़ा। किसी साधु ने पूछा—"भाई! अब इनके पीछे दौड़ने से क्या लाभ?" व्याध बोला—"महाराज जब तक ये पक्षी एक विचार और संगठन में हैं, तभी तक जाल का बोझ उठा सकेंगे।" ऐसा ही हुआ। थोड़ी ही देर में 'कहाँ उतरें?' के प्रश्न पर उनमें विवाद हो गया।

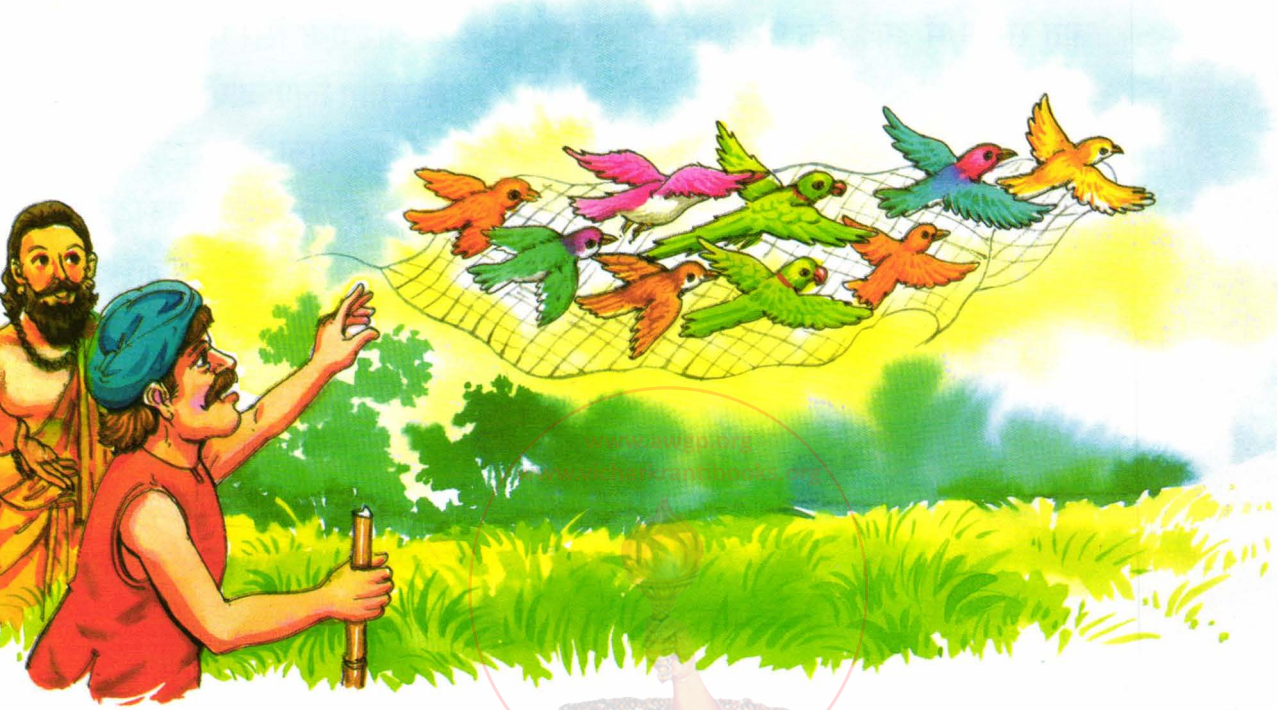

किसी-किसी ने ढील दे दी और परिणाम यह हुआ कि वे जालसमेत नीचे गिरे और मारे गए।

आपस में लड़ाई करने से ऐसा ही हाल होता है। अत: मिल जुलकर कठिनाई का सामना करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो मुँह वाला जुलाहा

एक जुलाहे का करघा टूट गया और उसके लिए लकड़ी लेने वह पास के जंगल में गया। सूखा पेड़ एक ही दीखा और वह उसे काटने लगा।

उस पेड़ पर एक यक्ष रहता था। उसने कहा—"इस पर मेरा निवास है, इसे मत काटो। अपना काम चलाने के लिए कोई वरदान माँग लो।"

जुलाहा कोई लाभदायक वरदान माँगने की बात सोचने लगा। सोचते-सोचते एक बात समझ में आई, कि दो हाथों की जगह चार हाथ और एक सिर की जगह दो सिर माँग लिए जाएँ। चार हाथों से दोगुना कपड़ा बुना जा सकेगा। दो सिरों पर लादकर हाट तक दूने वजन की पोटली ले जाई जा सकेगी। यक्ष ने मनोरथ पूरा कर दिया। इस विचित्र आकृति को लेकर जब वह घर लौटा, तो कुतूहल देखने सारा गाँव इकट्ठा हो गया। पत्नी भयभीत होकर छिप गई। मुहल्ले वालों ने उसे भूत-प्रेत समझा और ईंट-पत्थरों से मार डाला। व्यक्ति जैसा है वैसा ही बने रहने में ही भलाई है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मौन की सामर्थ्य

व्यास जी ने महाभारत लिखने के लिए गणेश जी को चुना। व्यास जी महाभारत के प्रसंग बोलते गए और गणेश जी लिखते गए। बोलने की गति स्वभावतः लिखने की गति से अधिक होती है, तो भी गणेश जी के लिखने में कहीं कोई रुकावट नहीं पड़ी।

कार्य की समाप्ति पर सूत जी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए गणेश जी से पूछा—"आपके ऊपर समझने और हाथ चलाने, कागज उलटने का अतिरिक्त श्रम पड़ा जबकि व्यास जी मात्र जोर से बोलते ही रहे। इतना अधिक कार्य आप किस प्रकार कर सके?" गणेश जी बोले—"मैं लिखते समय मौन रहा। उससे मेरी सारी शक्तियाँ एक ही स्थान पर रहीं और मैं एकाग्र होकर लिखता रहा। जो एक ही काम को एकाग्रता से करता है उसमें काम करने की शक्ति और बढ़ जाती है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोमड़ी का भ्रम

भोर हुआ तो लोमड़ी आँखें मलती हुई उठी। पूँछ उसकी उगते हुए सूरज की ओर थी। छाया सामने पड़ रही थी। उसकी लंबाई और चौड़ाई देखकर लोमड़ी को अपने असली स्वरूप का आभास पहली बार हुआ।

सोचने लगी—वह बहुत बड़ी है। इतनी बड़ी कि समूचे हाथी के बिना उसका पेट भरेगा नहीं। सो हाथी का शिकार करने वह घने जंगल में घुसती चली गई। भूख जोरों से लग रही थी; पर छोटी खुराक से काम क्या चलता। उसे हाथी पछाड़ने की सनक चढ़ी थी। भूखी लोमड़ी भाग-दौड़ में थककर चूर-चूर हो गई। तब तक दोपहर भी हो गई। सुस्ताने के लिए वह जमीन पर बैठी, तो सारा नजारा ही बदल चुका था। छाया सिमटकर पेट के नीचे जा छिपी थी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस नई असलियत को देखकर लोमड़ी का चिंतन बदल गया। वह सोचने लगी इतने छोटे आकार के लिए तो एक छोटी मेंढकी भी बहुत है। मैं बेकार छाया के भ्रम में इतने समय भटकी।

कभी-कभी मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाता है परंतु जब ज्ञान होता है तो पछताता है।

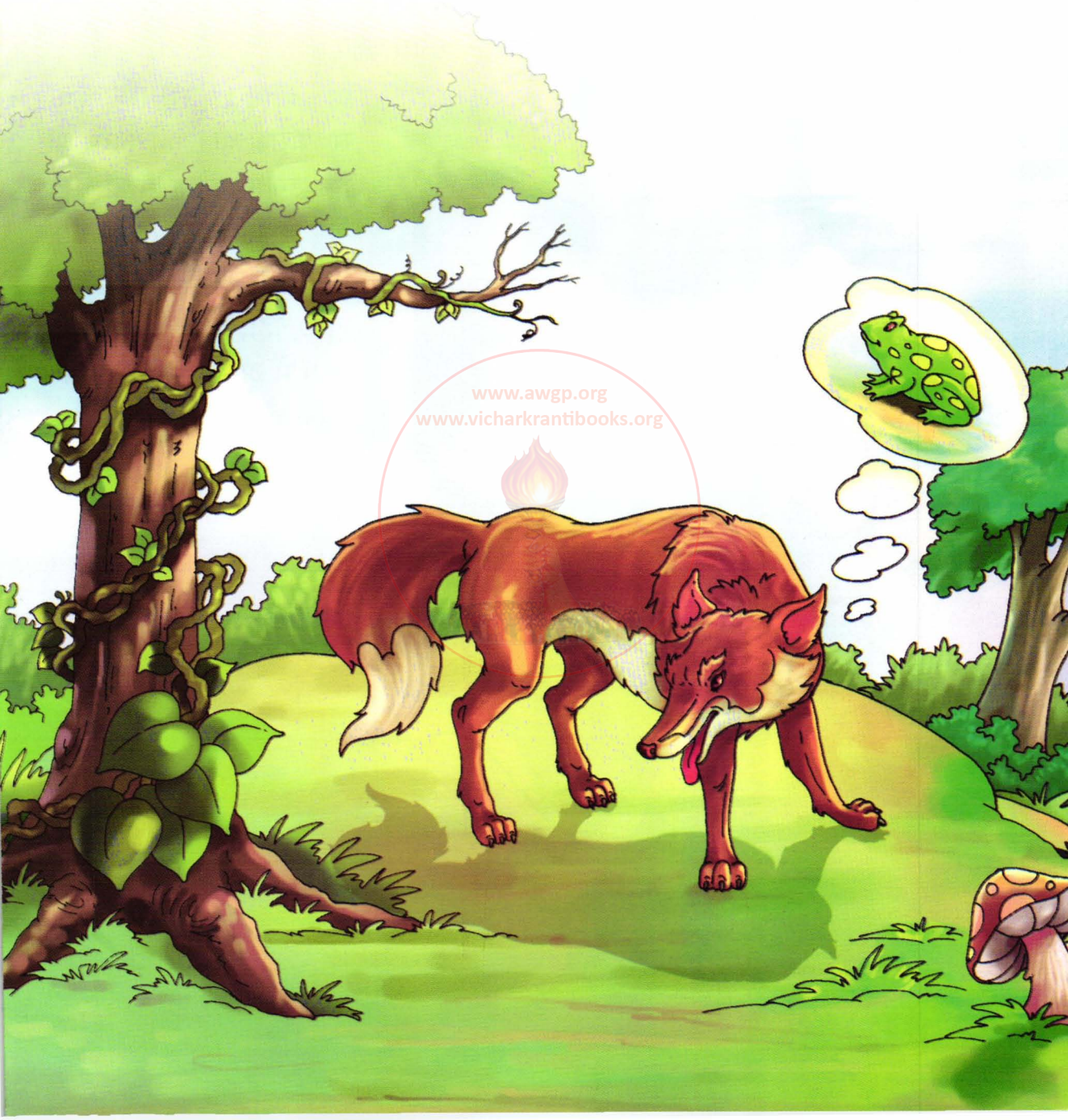

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईमानदारी की पूँजी

अमेरिका के राष्ट्रपति लिंकन जब विद्यार्थी थे, तब घर की गरीबी के कारण पढ़ाई खरच मेहनत-मजदूरी करके निकालते थे। एक दुकान पर उन्हें सेल्समैन का काम मिला। इसी बीच सौदा बेचते समय किसी महिला ग्राहक से भूल में एक रुपया अधिक वसूल हो गया। रात को हिसाब करते समय भूल का पता लगा, तो लिंकन कैशमेमो पर लिखे पते के आधार पर उसी समय पैदल चलकर उसके घर पहुँचे और क्षमा माँगते हुए पैसा लौटाकर बहुत रात गए घर लौटकर वापस आए।

उनकी प्रामाणिकता सर्वप्रसिद्ध थी। यही कारण था कि उनके अनेक सच्चे मित्र थे। वे कहते रहते थे, कि संपत्ति के नाम पर तो मेरे पास कुछ नहीं; पर सच्चे मित्रों के रूप में असाधारण वैभव का धनी हूँ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाश का स्त्रोत-विवेक

याज्ञवल्क्य राजा जनक की सभा में विराजमान थे और शंकाओं का समाधान कर रहे थे।

जनक ने पूछा—"प्रकाश कहाँ से प्राप्त होता है ? और प्रकाश न मिले तो किसका सहारा पकड़ा जाए ?"

याज्ञवल्क्य ने कहा—"सूर्य प्रमुख है। वह न हो तो चंद्रमा। चंद्रमा न हो तो दीपक। दीपक न हो तो विज्ञजनों से पूछकर प्रकाश प्राप्त करें।"

जनक ने पूछा—"कोई बताने वाला भी न दीखे तब ?" याज्ञवल्क्य ने कहा—"व्यक्ति को कोई मार्ग न सूझता हो तो अपने विवेक से काम लेना चाहिए, वह ही सच्चा-सही मार्ग बताता है।" विवेक का प्रकाश हर किसी के पास होता है। वह कभी नहीं बुझता।

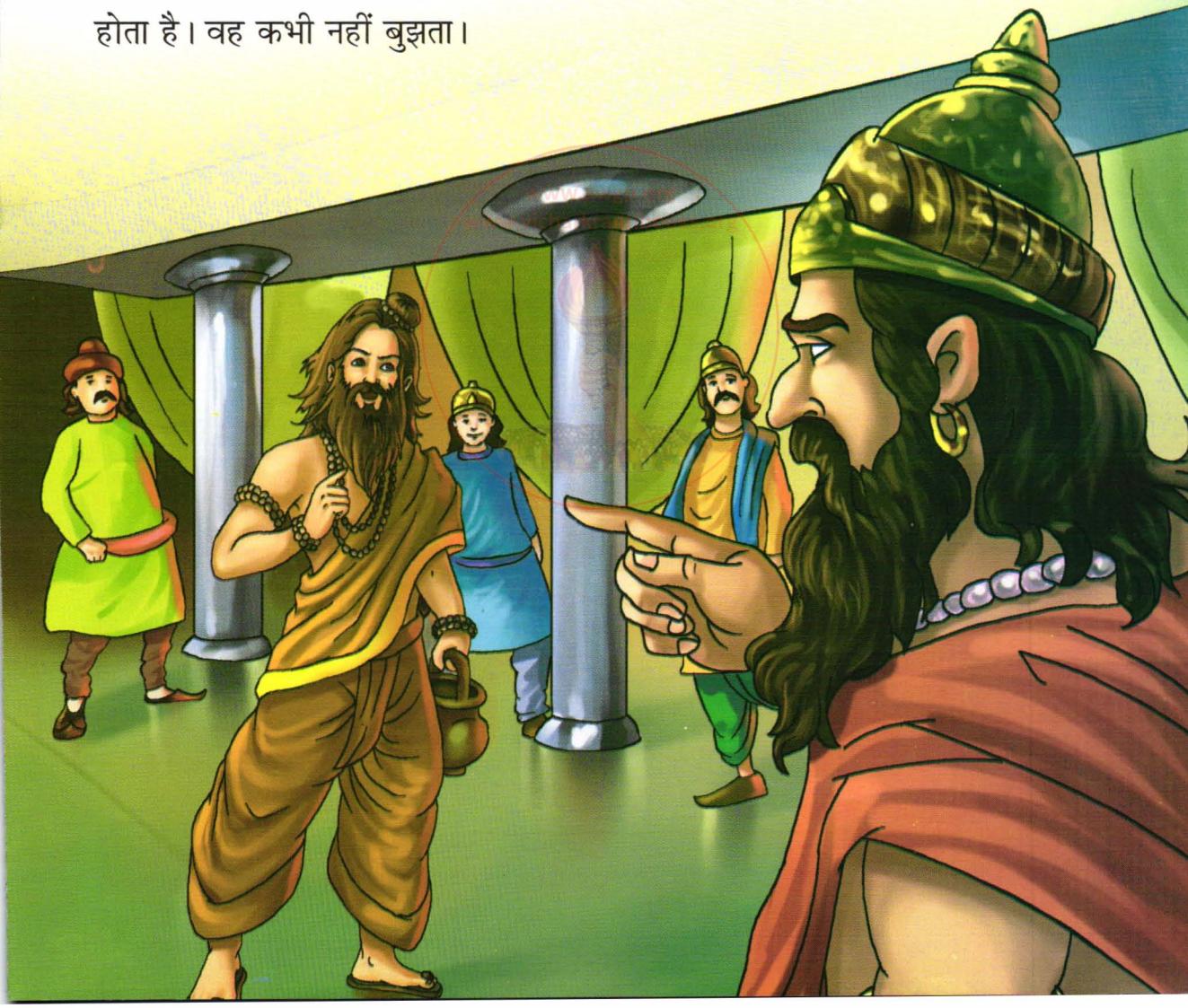

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समुद्र की कर्त्तव्यनिष्ठा

एक दिन की बात है चंद्रमा समुद्र से बोला—"आपके पेट में सारी नदियों का जल समा जाता है। आपकी तृष्णा शायद बढ़ गई है।"

समुद्र ने धीरे से कहा—"आप समझते नहीं, मैं तो अपने पानी को बादलों के द्वारा उस स्थान पर पहुँचाता रहता हूँ जहाँ आवश्यकता होती है। ऐसा नहीं करूँ तो इस सृष्टि का क्रम कैसे चलेगा, तुम्हीं बताओ?" "सभी लोग जमा करते रहें, दूसरों को न दें तो काम नहीं चलेगा। मैं तो अपना कर्त्तव्य निभाता हूँ और दूसरे क्या करते हैं मैं नहीं देखता"—समुद्र इतना कहकर अपने काम में लग गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्र की रक्षा सबसे पहले

हालैंड समुद्र से निचाई पर बसा हुआ है। पानी भीतर न घुसे इसलिए उस देश के किनारे पर दीवारें बनी हुईं हैं। कभी पानी भीतर आने लगता है तो बड़े-बड़े पंप उसे उलीचने के लिए लगाने पड़ते हैं।

एक दिन रात होते-होते एक लड़का पीटर समुद्र की दीवार पर से निकला। उसने देखा कि दीवार में छेद हो गया है और उससे होकर पानी नगर में तेजी से दौड़ रहा है। स्काउटिंग की शिक्षा प्राप्त अनुशासनप्रिय छात्र ने कोई और उपाय न देखकर अपनी बाँह उस छेद में ठूँसकर बहाव को रोका। सहायता के लिए औरों को पुकारता रहा पर उस सुनसान में किसी ने उसकी आवाज ही नहीं सुनी। बारह घंटे भयंकर शीत और पानी में डूबा हुआ लड़का मरणासन्न हो गया। सवेरे जब लोग उधर से निकले तो लड़के को इस स्थिति में पानी को रोके हुए पड़े देखा। उपचार कराने पर बड़ी कठिनाई से ही उसकी जान बचाई जा सकी। हालैंड को डूबने से बचाने वाले इस बालक पीटर का नाम हालैंड के इतिहास में अमर है।

ऐसे ही व्यक्ति अपने ऐसे ही गुणों के कारण विश्ववंद्य महामानव के रूप में पूजे जाते हैं। उनकी गाथाएँ अनेक के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाती हैं।

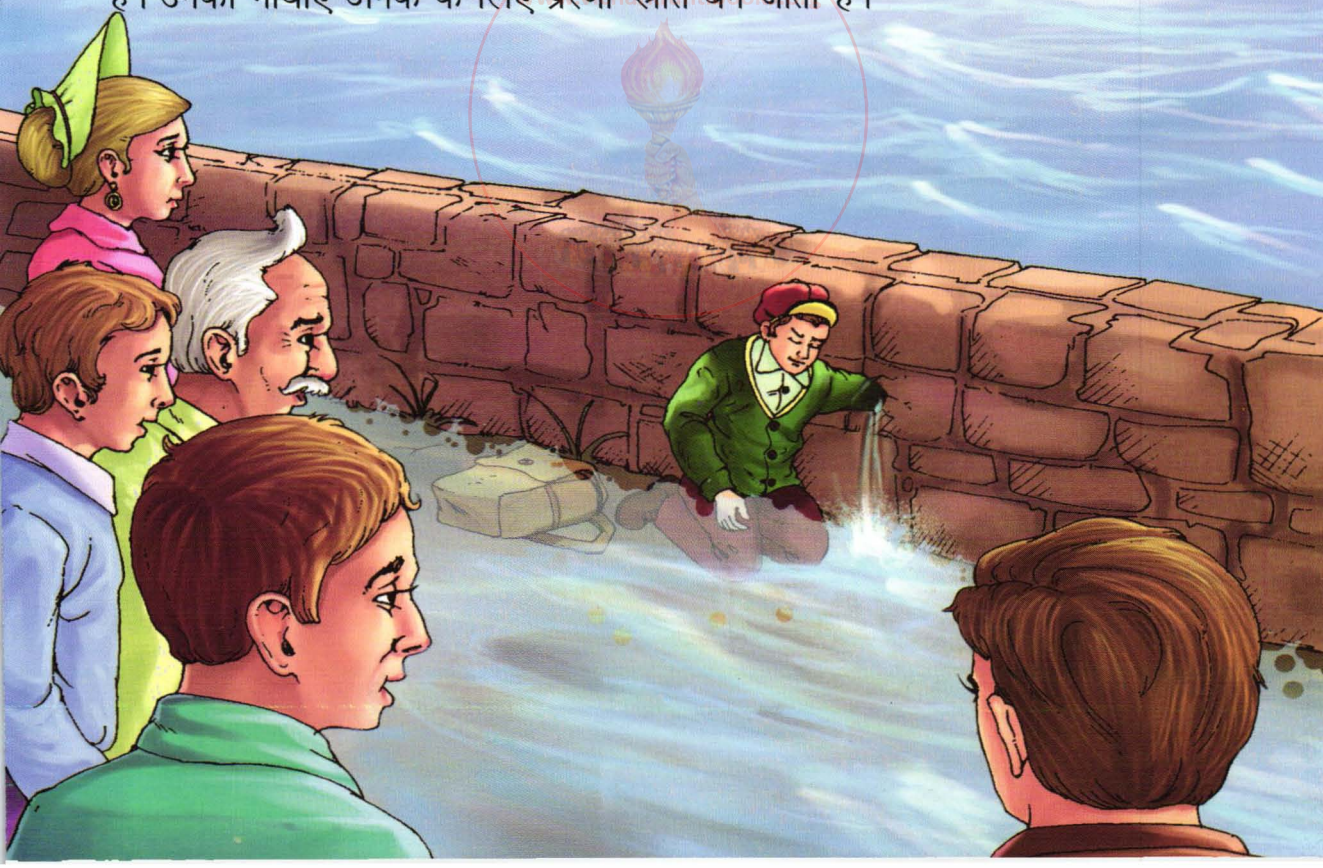

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बन्दर की बुद्धिमानी

नदी किनारे एक जामुन का पेड़ था। उस जामुन के पेड़ पर एक बंदर रहता था। नीचे तालाब में मगर रहता था। दोनों में दोस्ती हो गई। बंदर ऊपर से फल तोड़कर डालता, मगरमच्छ नीचे उन्हें खाता रहता। इसी प्रकार लंबा समय बीत गया।

एक दिन मगरमच्छ के मन में कुटिलता आई। उसने बंदर से कहा—"आज तुम्हारी भाभी ने दावत रखी है। बहुत पकवान बनाए हैं और आपको आग्रहपूर्वक बुलाया है।" थोड़ी आना-कानी के बाद बंदर सहमत हो गया। पीठ पर बैठकर उसके घर चलने की बात तय हुई।

बीच धार में पहुँचने पर मगरमच्छ ने करवट बदलनी चाही तो बंदर ने पूछा—"यह क्या?" मगरमच्छ ने असली बात बताई—"जो नित्य ही ऐसे स्वादिष्ट फल

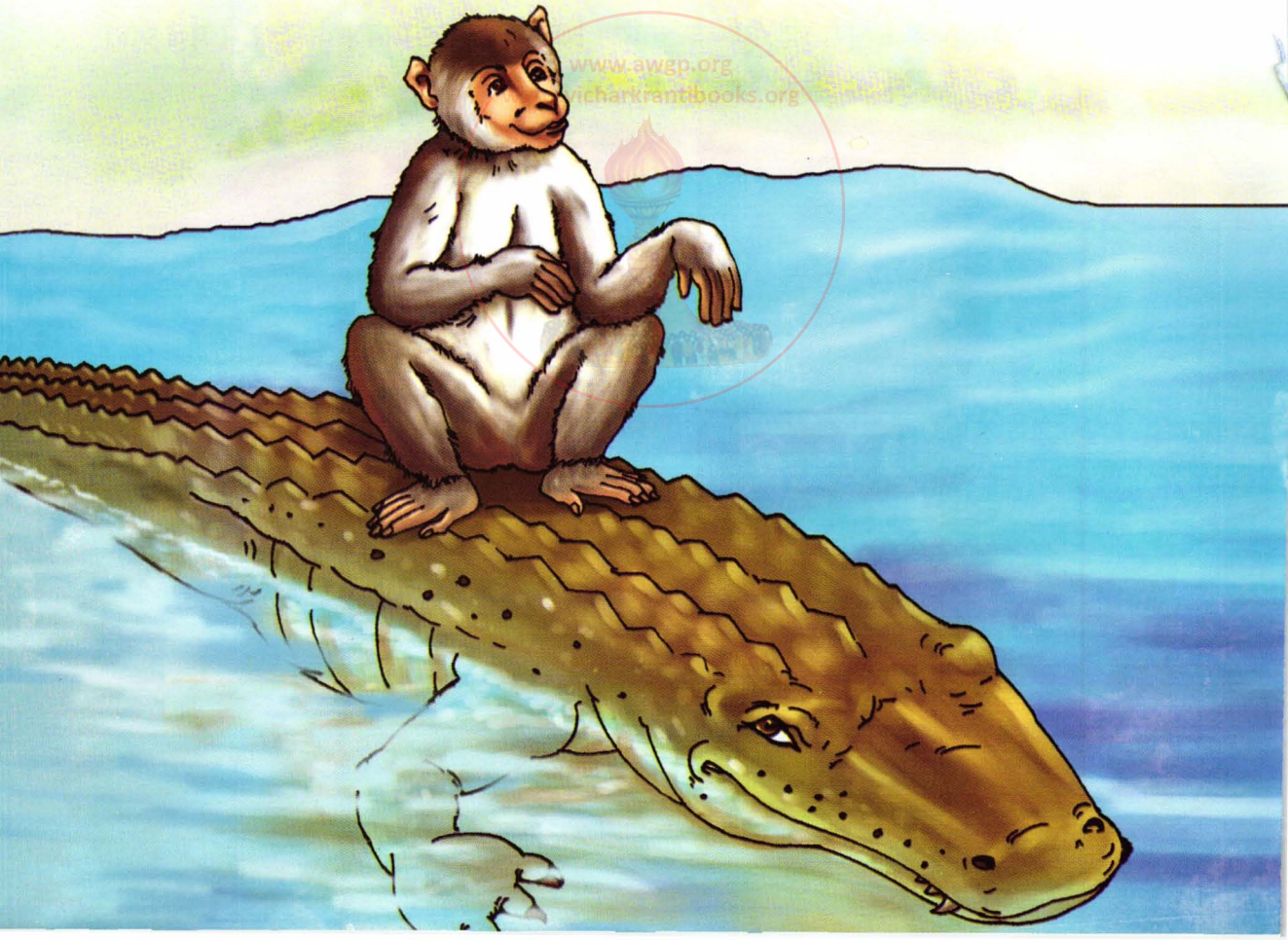

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाता है उसका कलेजा भी वैसा ही स्वादिष्ट होगा। सो तुम्हें खाने के लिए ही घर ले जाने का बहाना बनाया था।''

बंदर मगरमच्छ की धूर्तता देखकर आक्रोश से भर गया किंतु घबराया नहीं, उसने सूझ-बूझ से काम लिया और जोर से हँस पड़ा, बोला—''मूर्ख, इतनी सी बात थी तो कहा क्यों नहीं? मैं तो कलेजा पेड़ पर ही सूखता छोड़ आया। अब खाएगा क्या?''

मगरमच्छ ने सोचा अब क्या करना चाहिए, बोला—''चलो लौटकर चलते हैं और कलेजा लेकर फिर वापस आया जाए।'' किनारे पर पहुँचकर बंदर उछलकर पेड़ पर जा बैठा। इस प्रकार बुद्धि से काम लिया और जान बचाई। जैसा भी किसी का बाहर से व्यवहार नजर आता है, कोई जरूरी नहीं कि वह अंदर से भी वैसा ही हो।

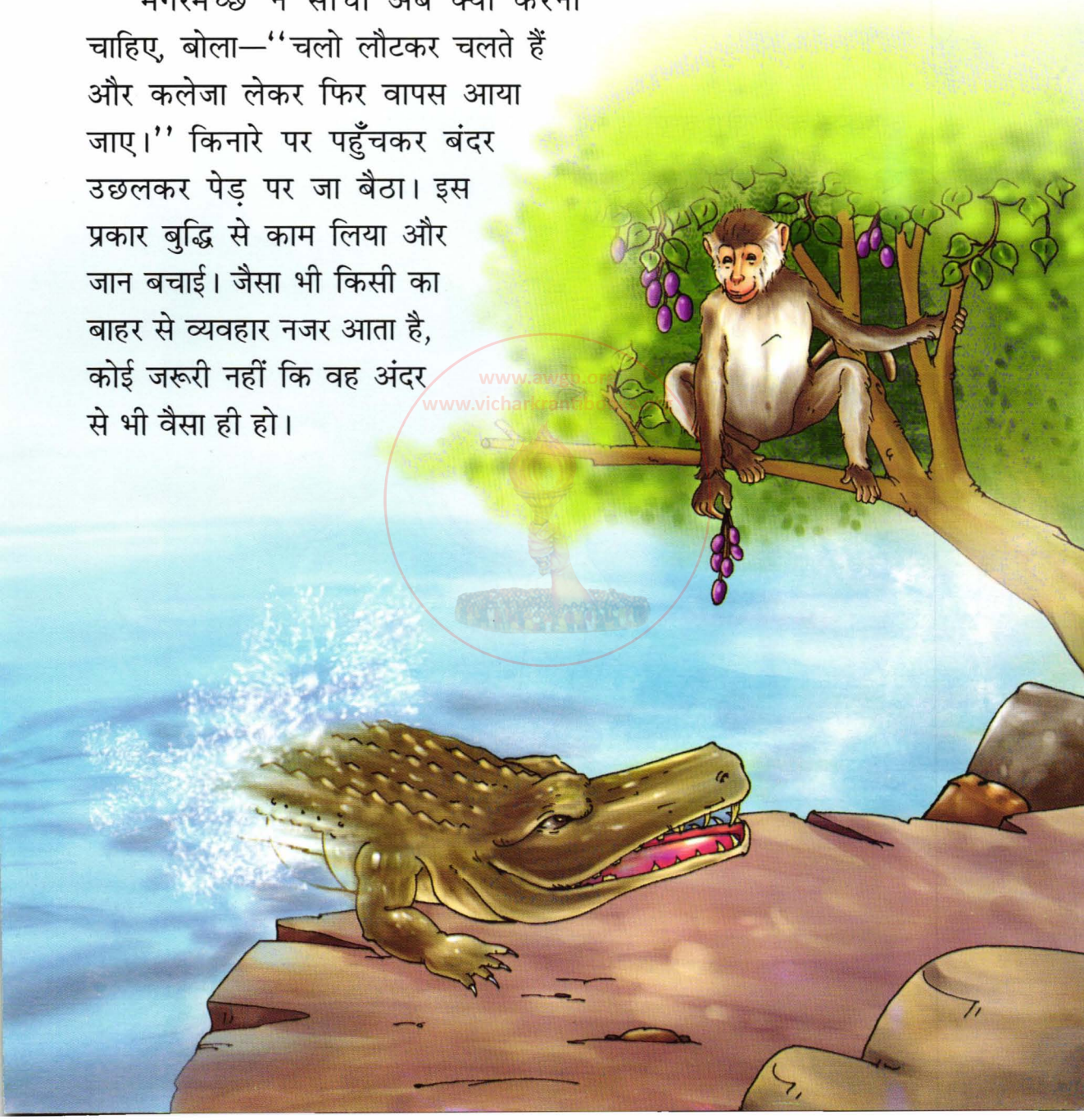

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपकार न भूलें

गुलाब के फूल ऊपर की टहनी पर खिल रहे थे और सड़ा गोबर उसकी जड़ में सिर झुकाए पड़ा था। गुलाब अपने सौभाग्य से सड़े गोबर के दुर्भाग्य की तुलना करते हुए गर्व से बोला और व्यंग्य की हँसी हँस दी।

माली उधर से निकला तो उसने यह सब देखा। उससे चुप न रहा गया। गुलाब के कान से मुँह सटाकर बोला—"तुम्हें इस सुंदर स्थिति में पहुँचाने में, इन पिछड़े समझे जाने वालों का कितनों का योगदान रहा है, तनिक इसे भी समझने का प्रयत्न करो।"

अहंकार वही लोग करते हैं जो दूसरों का उपकार याद नहीं रखते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा दिलीप और सिंह

रघुवंश की कथा है। राम के पूर्वज राजा दिलीप उन दिनों गुरु वसिष्ठ के आश्रम में रह रहे थे। उन्हें आश्रम की गायें चराने का काम सौंपा गया। वे उस छोटे काम को भी बड़ा मानते थे और बड़े मन से सौंपी जिम्मेदारी निभाते थे।

एक दिन एक सिंह ने गुरु की नंदिनी गाय को दबोच लिया। राजा के धनुष बाण काम नहीं आए। अब किया क्या जाए? गुरु की सौंपी जिम्मेदारी कैसे निभे? दिलीप ने अपने आप को सिंह के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया ताकि वह गाय को छोड़कर उन्हें खा ले। अपनी जिम्मेदारी को न निभाने का कलंक ओढ़ने की अपेक्षा उन्हें अपना शरीर देना अधिक ठीक लगा।

इस आदर्शवादी साहसिकता से सिंह भी सहम गया और छोड़कर चला गया। गाय भी बच गई और जिम्मेदारी निभाने की परीक्षा में सफल होने के कारण गुरुदेव का पूरा-पूरा आशीर्वाद भी मिला।

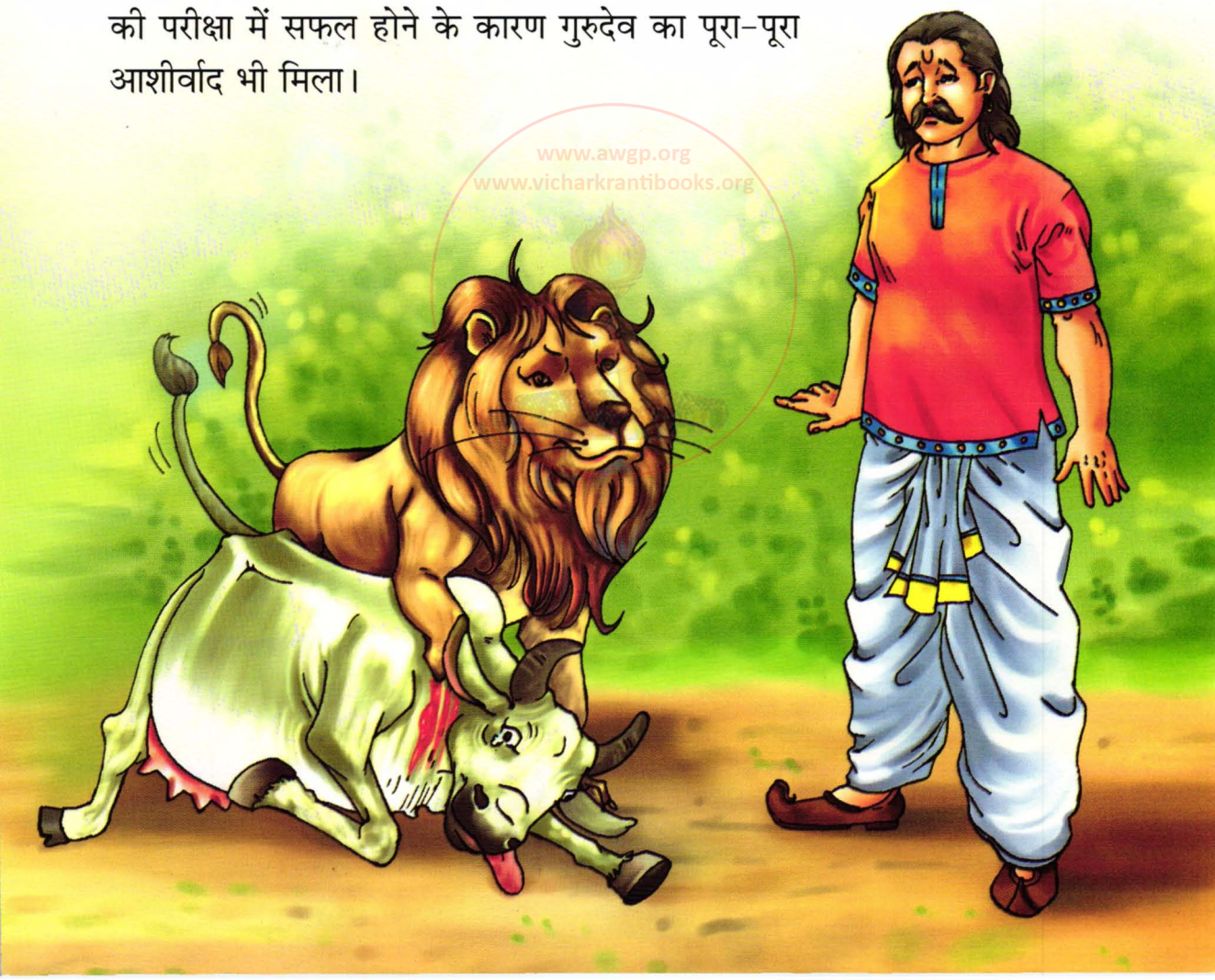

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरचंद्र का उपकार

एक बार की बात है। एक लड़के ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी से एक पैसा मांगा। उन्होंने पूछा—"तुम पैसे का क्या करोगे?"

"साहब, इससे मैं अपना पेट भरूँगा" लड़का बोला।

ईश्वरचंद्र जी ने पूछा—"दो पैसे दूँ तो?"

लड़के ने उत्तर दिया—"तब, जो एक पैसा मेरे पास बचेगा, उससे मैं अपनी बूढ़ी माता के लिए चने ले जाऊँगा।"

ईश्वरचंद्र ने फिर पूछा—"तुम्हें एक रुपया दूँ तो?" "साहब, तब मैं थोड़ा सामान खरीद लूँगा। उसे बाजार में बेचूंगा।

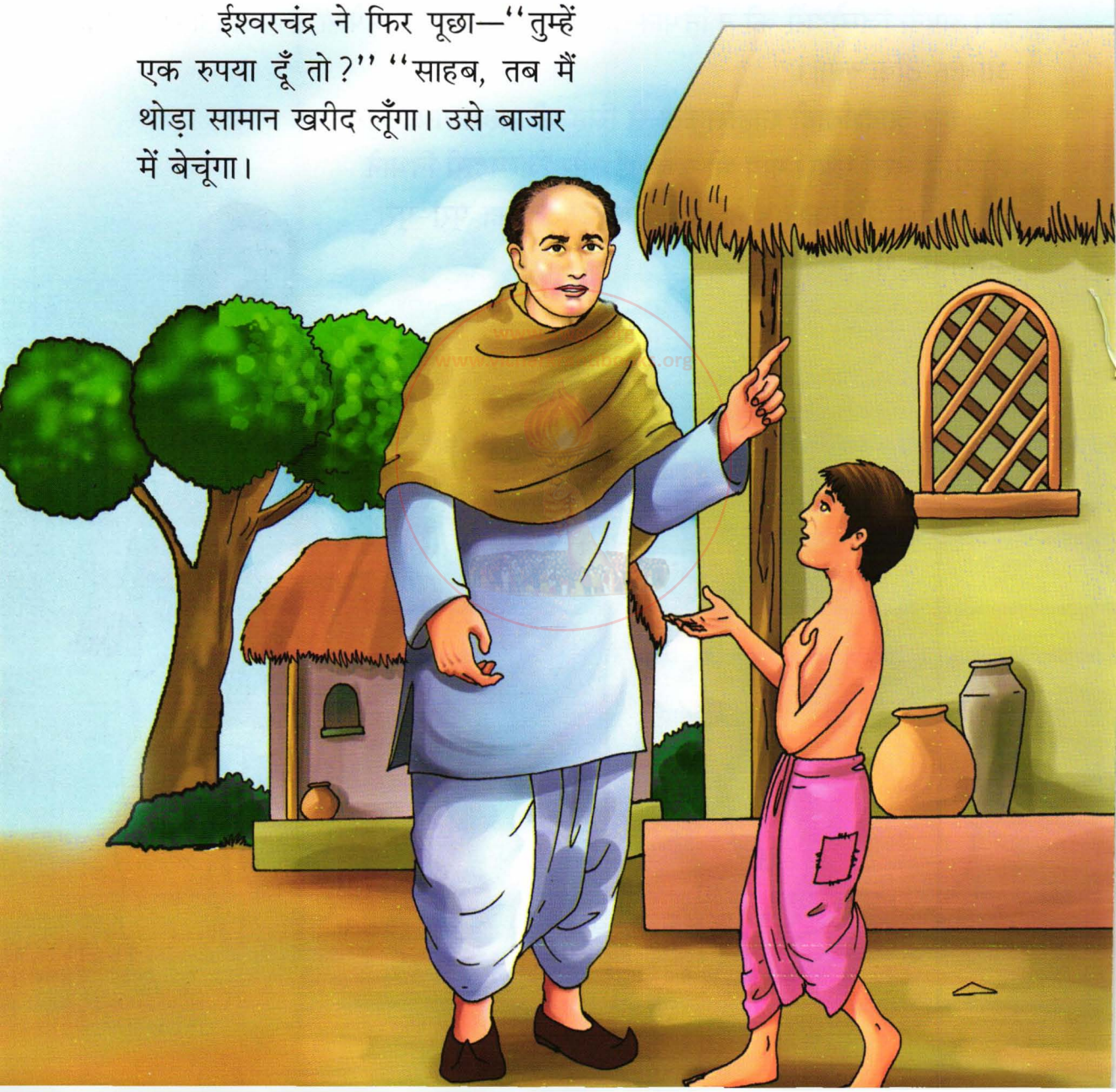

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धीरे-धीरे करके मैं अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँगा। अपनी रोजी-रोटी के लिए किसी पर निर्भर न रहूँगा। ईश्वर को धन्यवाद दूँगा''—लड़का कहने लगा।

ईश्वरचंद्र जी ने बड़ी प्रसन्नता से उस लड़के को एक रुपया दे दिया। उन दिनों एक रुपये की भी बहुत कीमत होती थी। कुछ समय बाद ईश्वरचंद्र ने देखा कि वह लड़का छोटी सी दुकान चला रहा है। ईश्वरचंद्र को देखते ही लड़का तुरंत दुकान से उतर आया। वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। लड़के की आँखों में आँसू थे। वह रुंधे गले से बोला—''साहब! आपके उपकार ने मेरा जीवन बदल दिया। मेरा भीख माँगना सदा-सदा के लिए छूट गया। मैं भी समाज का एक अच्छा नागरिक बन गया।''

ईश्वरचंद्र जी ने उसे गले से लगा लिया और कहा—''तुम भी सदा ऐसे ही दूसरों की सहायता करना।''

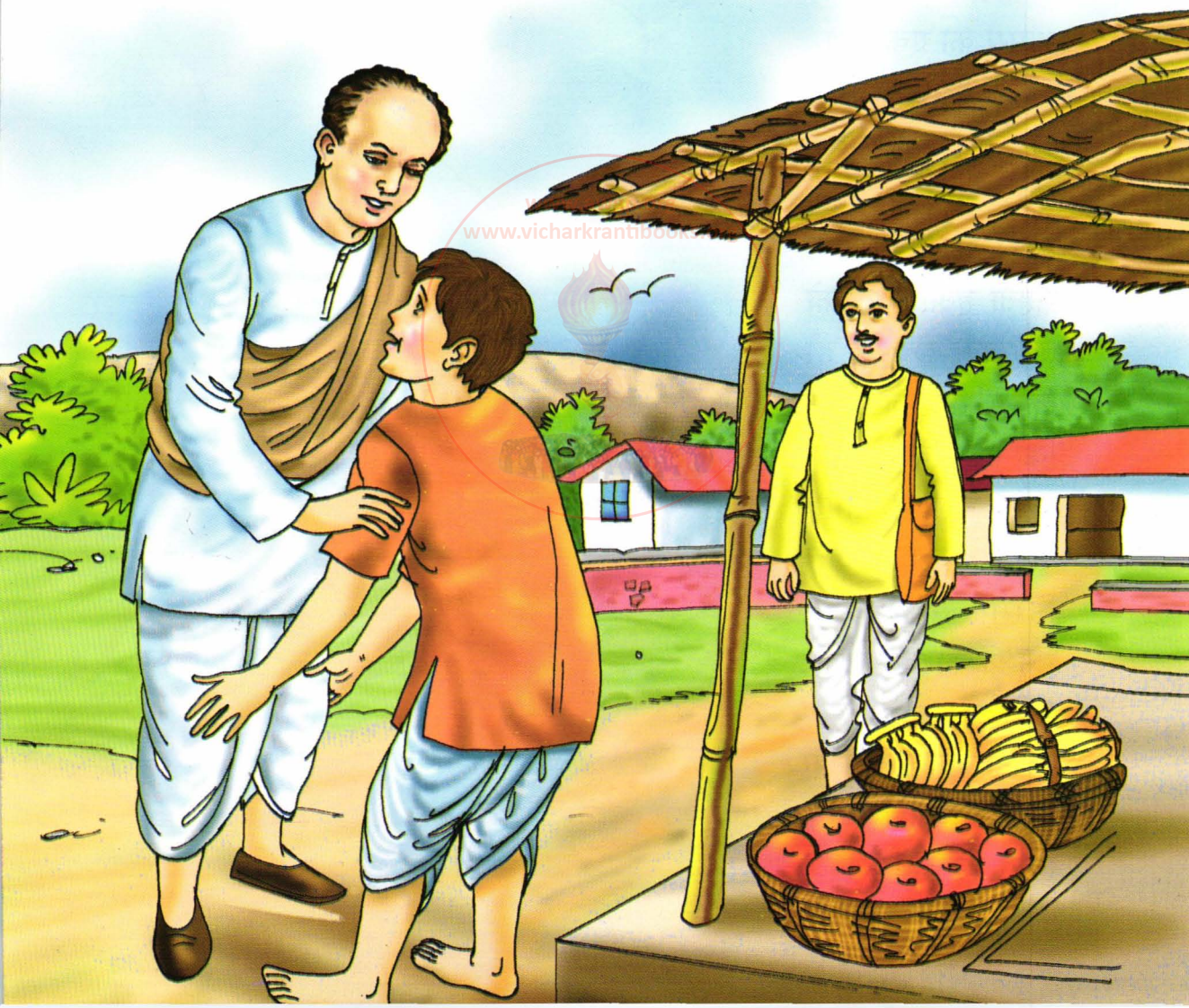

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थामस स्कॉट का साहस

न्यूयार्क में नार्थ नाम की नदी में थामस स्कॉट नाव चला रहा था। इसी समय नजदीक ही उसे एक नाव डूबती दिखाई दी। उसमें बहुत सारे स्त्री और बच्चे भरे हुए थे।

थामस अपनी नाव को बढ़ाकर डूबती नाव के पास ले गया। उसने देखा कि उसकी तली में एक बड़ा छेद हो गया है और पानी भरता जा रहा है। बचाव का और कोई उपाय न देखकर थामस उछल कर डूबती नाव पर चढ़ गया और छेद में अपना एक हाथ ठूँस कर बढ़ते पानी को रोक दिया। किसी प्रकार नाव किनारे लगी और उस पर चढ़ी सवारियाँ बच गईं। थामस का एक हाथ बरफ जैसे ठंढे जल के कारण सुन्न हो कर पूरी तरह बेकार हो गया। वह अपार कष्ट सहता हुआ हाथ को तब तक छेद में ही लगाए रहा, जब तक कि नाव किनारे तक पहुँच न गई। थामस के इस साहस और हिम्मत से बहुत से मनुष्यों की जान बची। परोपकार के लिए अपना जीवन दांव पर लगा देने वाले व्यक्ति अमर हो जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

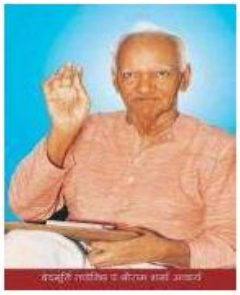

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org